Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2023

"आधुनिक भारत में राष्ट्रवादी लेखन : एक ऐतिहासिक अध्ययन"

डॉ. संतोष कुमारी [1]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, बावड़ी (जोधपुर)

ABSTRACT:

राष्ट्रवाद एक गम्भीर, चिन्तनशील, राजनीतिक विचारधारा है, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी मातृभूमि के साथ पहचान बनाकर प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों का एक समुदाय ही राष्ट्र का पर्याय है, जिसमें निहित हम की भावना उसे एक सूत्र में पिरो देती है। धर्म-संस्कृति, भाषा, एथनिक समूह प्रजाति परम्पराएँ, स्वतंत्रता एवं संप्रभुता, जनसंख्या आदि सभी राष्ट्र के मूल तत्व हैं। राष्ट्रवादी भावना विभिन्नता के भेदभावों को भुलाकर एकता का संदेश देती है। यह मैं के स्थान पर हम, द्योतक है। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता और राष्ट्रधर्म के प्रति यह गौरव और अभिमान को प्रतिबिंबित करती है। ऐसी राष्ट्रवादी भावनाओं से अनुप्राणित इतिहास लेखन की परंपरा प्राचीन रही है। हालांकि विभिन्न युगों का इतिहास विभिन्न रूपों को धारण करने वाला है, उसके निर्माण की प्रक्रिया प्राचीन काल से लेकर आज तक विभिन्नता से युक्त रही है। इतिहासकारों के माध्यम से इतिहास का लेखन किया जाता रहा है। जो युग परिवर्तन के साथ साथ परिवर्तित होता चला है जिसमें विभिन्न प्रकार के उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं लेकिन फिर भी उन सभी के बीच में राष्ट्रप्रेम की भावना मुख्य रूप से विद्यमान रही है। इतिहास लेखन के विभाजन का मानदंड राजनीतिक घटना, बाहरी आक्रमण, जलवायु परिवर्तन, विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रवृत्तियां भी रही हैं। अत: राष्ट्रवादी इतिहास लेखन अपने आप में एक गौरवशाली विषय है।

KEYWORDS:

आधुनिक भारत, राष्ट्रवाद, इतिहास लेखन, परंपरा, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि।

आलेख प्रस्तुति

इतिहास मानव जीवन की उपलब्धियों, सांस्कृतिक सोपानों, सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पीन, मनोरंजन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक आदि के परिवर्तन की निरंतरता को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। जो मनुष्य के आरंभ से लेकर उसके वर्तमान तक घटित होने वाली घटनाओं को तथ्य सहित वर्णन करने में सक्षम होता है। अध्ययन के आधार पर प्राचीन भारत के आदिकाल में सामाजिक घटनाओं की वस्तुस्थिति को जानने के लिए किसी भी प्रकार की पुस्तक का उल्लेख प्राप्त नहीं होता। हालांकि वेद, पुराण, महाकाव्य, धर्मशास्त्र, शिलालेख अभिलेख एवं विदेशी यात्रियों के विवरण आदि अनेक आधारों में प्राचीन भारतीय समाज, सभ्यता, संस्कृति एवं राजनीतिक पक्षों का स्वरूप प्रतिबिंबित होता है और समझा जा सकता है। लेकिन समस्या भी इनकी विश्वसनीयता की, वस्तुनिष्ठता की एवं इनके वैज्ञानिक आधारों की है।

उन्नीसवी शताब्दी में जब इतिहास लेखन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का प्रश्न उठा तो स्वाभाविक रूप से भारत के आदिकालीन ऐतिहासिक ज्ञानकोष की ओर विद्वानों का ध्यान गया। कुछ विद्वानों ने भारत के प्राचीन कालीन ऐतिहासिक ज्ञान पर प्रश्न चिन्ह लगाए और कहा कि, प्राचीन भारतीय विद्वानों को ऐतिहासिक समझ नहीं थी। यह कहना उनके लिए शायद इसीलिए आसान हो गया क्योंकि प्राचीन भारत में ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव है लेकिन कुछ विद्वानों ने यह जोर देकर कहा कि ऐतिहासिक लेखक की प्रवृत्तियाँ समय के साथ-साथ बदलती रही है। ऐतिहासिक घटनाएँ एवं समकालीन सभ्यता एवं समाज का दिग्दर्शन समकालीन साहित्य पुरातात्विक साक्ष्यों एवं विदेशी यात्रियों के विवरण में देखा जा सकता है। वेद, पुराण, महाकाव्य, स्मृतियों एवं लौकिक साहित्यों की बडी लम्बी सूची है। इनमें से कुछ अर्ध ऐतिहासिक पुस्तकें भी हैं। इन सभी माध्यमों से प्राचीन इतिहास लेखन पर व्यापक प्रकाश पड़ता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन इतिहास लेखन

इतिहास लेखन की प्रथम कालावधी में प्राचीन भारतीय इतिहास में वैज्ञानिक पद्धति का अभाव रहा, जिसमें तटस्थता, निरपेक्षता, वस्तुनिष्ठता आदि वैज्ञानिक गुणों का लोप प्राप्त होता है। सामान्य रूप से भारतीय प्राचीन इतिहास लेखन, इतिहास एवं साहित्य के मिश्रित परिणामों को प्रकट करता है साथ ही साथ दोनों के बीच में एक रेखा भी खींचता है। लेकिन फिर भी संपूर्ण भारतीय संस्कृति का इतिहास भारत की प्राचीन साहित्यिक धरोहर परम पूजनीय वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में निहित है। जैसे संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट के द्वारा रचित हर्षचरित कन्नौज के राजा हर्षवर्धन की जीवन गाथा है। जिसमें ऐतिहासिक सूचनाओं के माध्यम से यशोवर्मन ने गौड एवं मगध को अपने अधिकार में कर लिया था, आदि विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का वर्णन किया गया है। चंद्रबरदाई द्वारा रचित 'पृथ्वीराजरासो' पृथ्वीराज चौहान के जीवन को प्रस्तुत करता है जो समकालीन राजनीतिक घटनाओं एवं विभिन्न घटकों में अंतर संबंधों को स्थापित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

12 वीं शताब्दी के महाकाव्य राजतरंगिणी में कश्मीर के राजा के विषय में विभिन्न तथ्य उपलब्ध होते हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र तो समकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक जीवन को उद्घाटित करने वाला महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। दूसरी ओर प्राचीन महाकाव्य महाभारत एवं रामायण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चारों पुरुषार्थ का उल्लेख करने में अग्रणी हैं और किसी कारण इतिहास की श्रेणी में रखे जाते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन करने से यह तथ्य सामने आता है कि प्राचीन काल में इतिहास का लेखन बहुत कुछ काव्य रूप में अवतरित हुआ है। निश्चित रूप से प्राचीन लेखक विषय विशेषज्ञ, महान दार्शनिक, कुशल कविकार और उत्कृष्ट सामाजिक युग दृष्टा थे जिनकी भाषा अत्यधिक समृद्धि और कलात्मक थी। उन्होंने यह स्वीकार किया कि मानव इतिहास में विकास का स्वरूप चक्रीय रहा है। उन्होंने दो अन्य सिद्धांतों पर भी प्रकाश डाला। उनके अनुसार एक तो रेखीय है जिसके अंतर्गत इतिहास भविष्य की ओर बढ़ता जाता है और दूसरा संशयवादी है लेकिन ज्ञान के अभाव में भारतीय इतिहास लेखन में ये दोनों ही प्रकार से अस्वीकार कर दिए गए हैं।

संभवतः प्राचीन भारतीय इतिहास पौराणिक गाथाओं पर आधारित है। यह ऐतिहासिक कथाओं में मानव सच्चाई की संभावना पर आधारित है। इस व्यवस्था के अनुसार इतिहास को कथात्मक रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है जिसमें व्यक्ति को समाज एवं सभ्यता के अधीन स्वीकार किया गया है। भारतीय इतिहास दर्शन, पौराणिक गाथा, महाकाव्य, बड़ी-बड़ी कविताओं, कल्पनाओं में प्रकीर्ण अतीत को संगठित करने का एक तरीका है।

मध्यकालीन इतिहास

मध्यकालीन भारतीय इतिहास दो ऐतिहासिक कालखंडों में विभक्त दिखाई देता है। जिनमें पहला सल्तनत काल एवं दूसरा मुगल काल है। पूर्व मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकार तत्कालीन वृहद् हिंदू संस्कृति के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर सके जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। सल्तनत कालीन इतिहास लेखन में सांप्रदायिक कट्टरता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इतिहासकारों के अनुसार हिंदू संस्कृति को मुस्लिम संस्कृति के सामने कमजोर दिखाना उनकी मजबूरी थी क्योंकि सुल्तानों के संरक्षण में रहकर इतिहासकार एक धर्मनिरपेक्ष इतिहास की रचना करने में स्वतंत्र नहीं थे। सल्तनत कालीन इतिहासकारों में अल्बरूनी, मिनहाजुद्दीन, सिराज, हसन निजामी, अमीर खुसरों, जियाउद्दीन बरनी, इसामी, शम्सेसिराज, अफीम, हसन देहलवी, इब्नबतूता आदि ने अपनी-अपनी कृतियों मे माध्यम से समकालीन तथा अपने पूर्वयुगीन राजनीतिक सामाजिक एवं धार्मिक घटनाओं का उल्लेख किया है।

मध्यकालीन इतिहास की परंपरा में सबसे प्राचीन पुस्तक अल्बरूनी की तहकीके हिन्द है। यह एक बडा ग्रन्थ है। जिसमें 80 अध्याय हैं। इसका कार्यकाल 973 से 1048 ई0 है। इस पुस्तक में भारत के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक कला के विविध रूपों मूर्तिकला तथा भौगोलिक स्थिति पर व्यापक प्रकाश पडता है।

मध्यकालीन इतिहास भी काफी कुछ काव्य रूप में प्राप्त होता है। क्योंकि इस काल के लेखक भी

साहित्यिक अभिरुचि से संपन्न थे। समकालीन इतिहासकारों पर मध्य एशियाई अरेबियन इतिहास लेखन का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन पर पूर्वाग्रह एवं सांप्रदायिक तत्वों का भी प्रभाव रहा है। इस काल की इतिहास लेखन की भाषा क्षेत्रीय रही है, जो संस्कृत, पारसी, प्राकृत, बुंदेली जैसे प्रभावों से युक्त है।

मुगलकालीन इतिहास लेखन

मध्यकालीन इतिहास लेखन का दूसरा कालखण्ड मुगलकाल प्राचीन था सल्तनत कालीन इतिहास लेखन से अलग है। इस काल में इतिहास के समावेशी स्वरूप को अपनाया गया। अकबर जैसे शासकों ने राजत्व के साम्प्रदायिक आधारों का परित्याग करके हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित राजत्व स्थापना की जिसका आधार सामाजिक समरसत्ता थी सहिष्णुता, सुलहकुल, भाईचारा इस उदात्र विचारधारा के प्रमुख तत्व थे। समकालीन इतिहास लेखन इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा इतिहासकारों ने राजकीय दबाव मुक्त होकर निष्पक्ष एवं निरपेक्ष इतिहास लेखन को महत्व दिया।

तुजुके बाबरी, हुमायूँनामा, कानून-ए-हुमायूनी, तारीखे रशीदी, तारीखें शेरशाही, मखजान-ए-अफगाना, अकबरनामा, आइने अकबरी, मुन्तखर-उत- तवारीख, तारीखे अकबरी, जहाँगीरनामा, आलमगीरनामा, पादशाहनामा, शाहजहाँनामा आदि के द्वारा मुगलकालीन इतिहास लेखन पर विशद् प्रकाश पड़ता है।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवादी लेखन

भारतीय इतिहास लेखन का विकास एक चरणबद्ध प्रक्रिया के तहत होता रहा है जिसमें इतिहास को उपयोगी एवं प्रासंगिक बनाने हेतु विशेष प्रयास सम्मिलित रहे हैं। इतिहास लेखन में बीसवी शताब्दी में ट्रेवेलियन, रॉके, ई.एच. कार, ब्यूरी एवं कालिंगवुड जैसे विद्वानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके परिणाम स्वरूप इतिहास में तटस्थता, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता एवं वैज्ञानिकता का मूल्य बढ़ा। वह अब धार्मिकता, पंरपरा तथा मिथ्या रूढ़िवादी भावनाओं एवं विभिन्न प्रकार के विवादों से मुक्त होकर प्रांसगिक एवं उपयोगी तथा भविष्य के लिए मार्गदर्शक बना। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी में इतिहास लेखन का बहुआयामी दृष्टिकोण अवतरित हुआ जिसने इतिहास में वैज्ञानिकता के साथ-साथ वैचारिक दृष्टिकोण को भी विकसित किया। जिसका सबसे महत्वपूर्ण कारण विश्व में नवीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव था। इस काल में इतिहास लेखन के विभिन्न संप्रदाय जैसे साम्राज्यवादिता, उपनिवेशवादिता, राष्ट्रवादिता तथा मार्क्सवादिता आदि सामने आए।

इतिहास में राष्ट्रवादी उपागम स्वदेशी बनाम विदेशी वाद-विवाद की पृष्ठभूमि पर आधारित था। जिसमें राष्ट्रहित को व्यक्तिगत हित से सर्वोपरि समझा गया। उन्नीसवी शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में राष्ट्रवाद की वृहद पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ। इसका स्पष्ट स्वरूप 20वीं शताब्दी में निर्धारित हुआ इस दौर में दुनिया में अनेक युद्ध हुए। इससे पूरा यूरोप प्रभावित हुआ। साम्राज्यवादी होड़ ने दुनिया को हिलाकर रख दिया। बीसवीं शताब्दी में यूरोप में राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया और अधिक तीव्र होती चली गई जिसका परिणाम प्रथम महायुद्ध के रूप में सामने आया।

भारत में राष्ट्रवाद की प्रकृति पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न थी क्योंकि भारत अनेक रूपों में विभक्त था अर्थात धर्म, भाषा, संस्कृति, परंपरा, सामुदायिक समरूपता आदि के आधार पर भारत विविध रूप में अपना स्थान बनाए हुए है। जबकि उसकी यह विविधता उसकी विशेषता भी है। यद्यपि प्राचीन धर्म शास्त्रों में भारतीय गौरव का अत्यधिक वर्णन किया गया है। वहां पर पृथ्वी को माता और आकाश को पिता के रूप में अभिहित किया गया है। विष्णु पुराण राष्ट्र के प्रति श्रद्धा की बात करता है उसमें भारत का यशोगान किया गया है। भागवत पुराण भारत को विश्व की पवित्र भूमि कहता है। रामायण में जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से महान कहा गया है। इस प्रकार भारत की गौरवशाली व्याख्या प्राचीन साहित्य में सर्वत्र प्राप्त होती है। वास्तव में प्राचीन साहित्य में राष्ट्रवादी भावनाएं कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

भारतीय राष्ट्रवादी लेखन का उद्देश्य विदेशी सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना का आकलन करना, राष्ट्रीय गौरव गाथा एवं राष्ट्रीय विरासत का सम्मान करना, भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को समाज के सामने प्रस्तुत करना, राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर उसके हितों की रक्षा करना, राष्ट्रवादी इतिहास के विभिन्न आयामों का तथ्यपरक विश्लेषण करना, राष्ट्र आंदोलन को राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से मूल्यांकित करना आदि रहा है। यही कारण था कि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने साम्राज्यवादी इतिहासकारों के विरुद्ध भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करने का प्रयत्न किया है। जिसका सफल उदाहरण वी डी सावरकर की पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस के रूप में सामने आता है। वी. डी. सावरकर ने अपनी पुस्तक में पहली बार 1857 के विद्रोह को पहला स्वतंत्रता संग्राम कहकर यूरोपीय इतिहासकारों की अवधारणा का जवाब दिया जिसमें यूरोपियन ने 1857 के विद्रोह को गदर या असभ्य सिपाहियों के विद्रोह की संज्ञा दी थी।

राष्ट्रवादी इतिहासकार के रूप में सी.वी. चिंतामणि ने अपनी पुस्तक इंडियन पॉलिटिक्स सिन्स दि म्युटिनी में स्पष्ट किया है कि 1857 के पूर्व का इतिहास भारत में ब्रिटिश शक्ति के विस्तार एवं विभिन्न क्षेत्रों सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक में प्रभावों का इतिहास रहा है। जबकि 1857 की क्रांति इन प्रभावों के विरुद्ध प्रतिक्रिया का परिणाम थी। यह एक विरोध का स्वर था जो धीरे-धीरे संपूर्ण राष्ट्र का स्वर बन गया।

राष्ट्रवादी इतिहासकारों में एस.एन. सेन ने अपनी पुस्तक 1857 में अंग्रेजो के खिलाफ हुए विद्रोह को राष्ट्रीय कह कर इसके महत्व को बढ़ाया। इसे इन्होंने राष्ट्रवाद के विकास का प्रथम चरण कहा है।के.एम. पणिक्कर एवं डॉ. एस.बी. चौधरी ने राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहन से जोड़कर 1857 की क्रान्ति को देखा है।

प्रख्यात राष्ट्रवादी इतिहासकार आर.सी. मजुमदार का जन्म ब्रिटिश राज में 4 दिसम्बर 1888 ई. में बांग्लादेश के फरीदपुर जिले में हुआ थाआर. सी. मजुमदार का रूझान आरंभ से ही शिक्षण कार्य की ओर था इसीलिए उन्होंने 1912 में आन्ध्र कुषाण पर डिजर्टेशन किया।आर. सी. मजुमदार ने अपनी योग्यता के अनुरूप देश के कोने-कोने में स्थित शैक्षणिक संस्थाओं के बौद्धिक निर्माण में योगदान दिया। 1953 में आर.सी. मजुमदार को सरकार की ओर से भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास लेखन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी मिली। उन्होनें स्वतंत्रता का इतिहास लेखन समिति का निर्देशन किया।आर. सी. मजुमदार ने "हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दि इण्डियन पीपल" का संपादन दो खण्डों में किया। यह पुस्तक प्राचीन एवं मध्ययुगीन इतिहास एवं संस्कृति के ज्ञान का आधार बनी। इसके अतिरिक्त कारपोरेट लाइफ इन एशिएंट इण्डिया, ऐन्सिएन्ट इण्डिया दि वाकाटक गुप्त एज, दि क्लासिकल अकाउन्टस ऑफ इण्डिया, एशिएंट इण्डियन कालोनीज इन दि फर ईस्ट, हिन्दू कालोनीज, इन दि फार ईस्ट, एशिएंट इण्डियन क्लोनीज इन दि साउथ ईस्ट एशिया, इन्सक्रिप्सन ऑफ कम्बुज देश, हिस्ट्री ऑफ एशिएंट बंगाल एण्ड ऑफ मिडिक्ल बंगाल, दि अरब इनवेजन ऑफ इण्डिया, एक्सेसन ऑफ आर्यन कल्चर इन ईस्टर्न इण्डिया, हिस्ट्री ऑफ फीडम मूवमेन्ट, दि फेसेज ऑफ इण्डियाज स्ट्रगल फार फ्रीडम आदि पुस्तकें उन्होंने लिखी। इनके अनुसार अट्ठारह सौ सत्तावन का तथाकथित स्वतंत्रता संग्राम एक लोकप्रिय विद्रोह के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उन्होंने कहा है कि यह स्वतंत्रता संग्राम न राष्ट्रीय था और न ही स्वतंत्रता संग्राम। इसका स्वरूप क्षेत्रीय था जो अपने-अपने हितों की भावना को लेकर के अग्रसर हुआ था।

पुरातत्व शास्त्री, इतिहासकार, राजनायिक शिक्षाविद ताराचंद भारतीय राज्य सभा की ओर से सांसद रहे। जिन्होंने भारतीय इतिहास को समृद्धशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उनकी समस्त पुस्तकों में 'भारतीय संस्कृति पर इस्लाम का प्रभाव' नामक पुस्तक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति पर इस्लाम के प्रभाव को परिलक्षित किया है। ताराचंद ने किसी भी विचारधारा को आगे बढ़ाने से पूर्व, उसे स्थापित करने से पूर्व साहित्य को महत्वपूर्ण माना। वस्तुतः राष्ट्रवादी विचारधारा को भी तभी बल मिल सकता है जब इतिहासवादी लेखन के एक नवीन परिप्रेक्ष्य की स्थापना की जाए। ताराचंद मार्क्सवादियों को भी राष्ट्रवादी मानते थे। ताराचंद ने प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास लेखन में अंतर करते हुए दोनों परिप्रेक्ष्यों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक अधिसंरचनाओं को उत्तरदाई माना और कहा कि, समय की मांग भी यही है। उनके अनुसार इतिहास में तथ्यों का जुगाड़ करने की बजाय तथ्यों के विश्लेषण को महत्व दिया जाना चाहिए क्योंकि इतिहास में समसामयिक परिस्थितियां महत्वपूर्ण होती है।

मराठों के प्रशंसक एवं महान मराठा राष्ट्रवादी इतिहासकार जी.एस. सरदेसाई ने विभिन्न विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखीं। उन्होंने मराठों के उत्कर्ष, उनके जातीय गौरव एवं मराठा राष्ट्रवाद को महत्वपूर्ण माना। उनकी रचना 'न्यू हिस्ट्री ऑफ मराठा' ने उन्हें बड़े इतिहासकारों के रूप में स्थापित कर दिया।

इसके अतिरिक्त रामकृष्ण गोपाल भंडारकर, जयचंद विद्यालंकार, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, काशीप्रसाद जायसवाल, विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े, वी डी सावरकर अर्थात विनायक दामोदर सावरकर, ठाकुर प्रसाद वर्मा, डॉ शिवानी सेन, निखिलेश गुहा, दामोदर धर्मानंद कोसांबी, विश्वेश्वरनाथ रेड, आनंद केन्तिश कुमारस्वामी, पुरूषोत्तम नागेश को, प्रोफेसर राधाकुमुद मुखर्जी, आचार्य नरेंद्र देव, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ राम मनोहर लोहिया, डॉ अल्लादी लीला कृष्णमूर्ति, डॉ आनंद मिश्रा आदि सभी राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में अग्रणी रहे हैं जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण योगदान से राष्ट्रवादी इतिहास को युक्तिसंगत बनाने में महती भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक भारत में राष्ट्रवादी लेखन को दृष्टि में रखते हुए अनेक इतिहासकारों ने अपनी लेखनी चलाई जिन्होंने भारतीय संस्कृति साहित्य को भी अपने लेखन का आधार बनाया हालांकि विभिन्न इतिहासकार अलग अलग विचारधारा में परिणत हो गए और उनके लेखन में उन विचारधाराओं का प्रतिबिंब भी पूर्णतः प्रति लक्षित होता है। बीसवीं शताब्दी में जिन लेखकों ने कलम चलाई उन्होंने भी पूर्ववर्ती राष्ट्रपतियों को अलग आधार बनाया उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों में समीक्षात्मक दृष्टि का अभाव प्राप्त होता है। लेकिन वर्तमान में इतिहास लेखन पर पुनर्विचार करने की, उसे संशोधित करने की, उसमें सुधार करने की महती आवश्यकता है। हमारी भारतीय संस्कृति कहीं न कहीं पाश्चात्य संस्कृति के अवरूप को धारण करती चली जा रही है। इतिहासकारों को यह देखना होगा कि अपनी संस्कृति को गौरवशाली और महिमामंडित बनाने के लिए हमें किन तथ्यों को सामने लाना है। हमारे देश का गौरव काल के किस गर्त में आज भी बंद है। उन गौरवमई तथ्यों को वहां से निकाल कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। आधुनिक इतिहास लेखन में धर्म भावना समाज सापेक्ष इतिहास लिखने के स्थान पर निरपेक्ष इतिहास लिखने की परंपरा का विकास हुआ है। और राजनीति विषय वस्तु को वरीयता दी गई परिणाम स्वरूप राजनीति आधार पर इतिहास लेखन में विभिन्न विचारधारा पल्लवित हुई। वर्तमान में एक ऐसे इतिहास लेखन की आवश्यकता है जो कि राष्ट्रधर्म, मानवीय भावना और सामाजिक सापेक्ष पर आधारित हो।

REFERENCES

1. बी.के. श्रीवास्तव, इतिहास लेखन अवधारणा विधाय एवं साधन. 2001
2. डॉ. के. एल. खुराना, डॉ. के. एल. बसंल इतिहास लेखन की धारणा तथा पद्धतियाँ 2017
3. प्रो. राधेशरण उपाध्याय - इतिहास और इतिहास लेखन, 2015.
4. श्रीधरण - इतिहास लेख, 2015
5. डॉ परमानंद सिंह - इतिहास दर्शन पुनर्मुद्रण 2017
6. मणिकांत सिंह - आधुनिक इतिहास लेखन सर्विसेज
7. के. एल. कमल - समाजवादी चिंतन, जयपुर
8. ग्रोवर बीएल एवं यशपाल - आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, प्रकाशन एस चंद्र एंड कंपनी लिमिटेड 2008
9. पांडे धनपति - आधुनिक भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स दिल्ली
10. ताराचंद - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, पब्लिकेशंस डिविजन, भारत सरकार, 1961